मानवीय मूल्यों का ह्रांस चिन्ताजनक-दादी जानकी

आस्ट्रेलिया से गूंजा विश्व शान्ति का संदेश

मेलबोर्न/आबू रोड, 10 दिसम्बर, निसं। दुनियां भर से आये अध्यात्म और धर्म गुरूओं ने एक स्वर में पूरे विश्व में शान्ति स्थापन के लिए कार्य करने पर बल दिया। आस्ट्रेलिया का संसद धर्ममय हो गया। विश्व धर्म संसद सम्मेलन में पूरी दुनियां से दस हजार से भी ज्यादा धर्म गुरूओं ने शिरकत किया। 3 से 9 दिसम्बर तक आयोजित पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स कान्फ्रेन्स के छठें एवं सातवें दिन ओपेन तथा क्लोजिंग प्लेनरी में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि पूरे दुनियां में मानवीय मूल्यों का लगातार पतन हो रहा है। जो आने वाली पीढ़ी के लिए खतरनाक है। हम सभी को मिलकर एक ऐसा साझा प्रयास करना चाहिए जिससे एक बेहतर विश्व की पुनर्स्थापना हो सके।

आगे उन्होंने कहा कि जातिधर्म, सम्प्रदाय तथा क्षेत्रवाद के झगड़े एकता और समरसता को तोड़ रहे हैं। हम सभी एक सूर्य और एक आसमान के नीचे रहते हुए भी विभिन्नता को अंगीकार कर रहे है जो ठीक नहीं है। विश्व वसुधैव कुटुम्बकम की कहावत को चरितार्थ करना है तो धर्म से उपर उठते हुए अध्यात्म को जीवन का अंग बनाने का प्रयास करना चाहिए। हम उस एक परमात्मा की संतान है जिसका जातीय धर्मों से नाता नहीं है। उसने हमें एक बनाया है और हमें उसे स्वयं के प्रति समर्पित करते हुए जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। आज आसुरी प्रवृत्तियां हावी होती जा रही है। इससे लोगों में भय है। यदि हमें इसका समाधान तलाशना है तो आध्यात्मिकता को अपनाना ही होगा। यदि अमानवीय शक्तियां अपना काम तेजी से सकती हैं तो दैवी शक्तियां क्यों नहीं कर सकती। अब समय की मांग है हम पूरे दुनियां में दैवी शक्तियों को अर्जित करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें।

वैश्विक समस्याओं के बारे में बोलते हुए दादीजी ने कहा कि जब हमारी सोच सकारात्मक होगी तब समाज सकारात्मक दिशा में अग्रसर होगा। आज जिस तरह से मानसिक प्रदूषण बढ़ रहा है। इसके परिणाम हम सभी के सामने हैं। जरूरत है कि इन समस्याओं को मूलतः जड़ से समाप्त करने लिए गहराई से चिंतन करें। सर्व धर्म के लोगों को दादीजी ने एक मंच पर आकर वैश्विक प्रयास करने पर बल दिया।

ज्ञातव्य हो कि इस सम्मेलन की शुरूआत सन् 1893 में शिकागो में हुई थी। जिसमें भारत का प्रतिनिधत्व करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों की पताका फहराई थी। इसके पहले यह काफ्रेन्स 2004 में वर्सिलोन में आयोजित की गयी थी।

फोटो, 10एबीआओपी, 1 पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स कान्फ्रेन्स के क्लोजिंग प्लेनरी में सम्बोधित करती दादी जानकी।